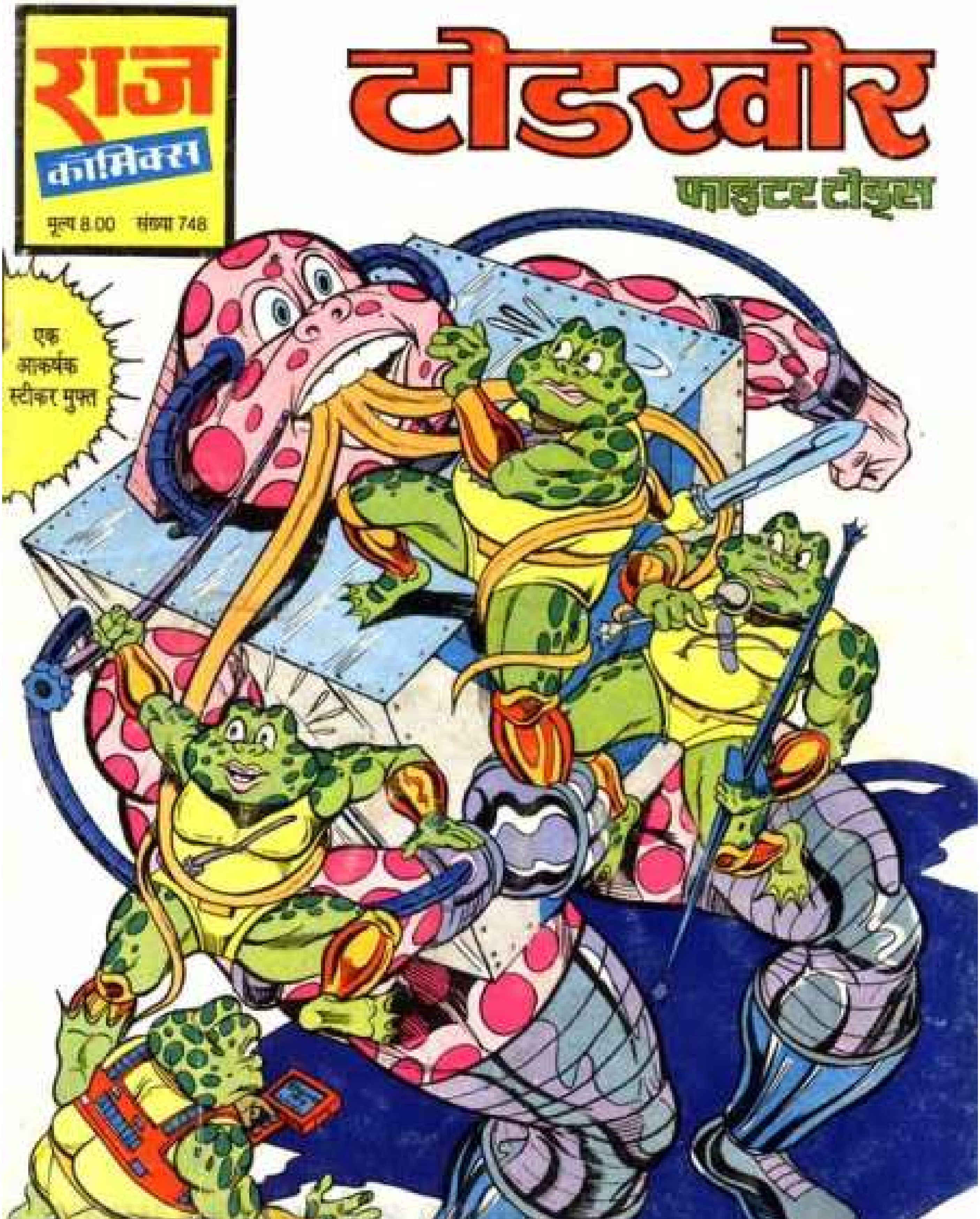
राज
कॉमिक्स
मूल्य 8.00 संख्या 748
टोडखोर
फाइटर टोड्स
एक
आकर्षक
स्टीकर मुफ्त

सोना, चांदी, हीरे, जवाहरात, डॉलर, दुर्लभ पशु और उनकी कीमती खालें। सूअर की खालों को छोड़कर। उनके सींग, गधे के सींगों को छोड़कर। उनकी हड्डियां, कुत्ते की हड्डियों को छोड़कर। परफ्यूम, कीमती इलेक्ट्रॉनिक्स सामान, घड़ियां, कैमरे, हथियार इत्यादि की तस्करी के समाचार तो आए दिन सुनने को मिलते ही रहते हैं–
मगर तस्करी की इन वस्तुओं में नई व दुर्लभ चीजें भी जुड़ती रहती हैं। जैसे खूबसूरत तितलियां, और जैसे–
रोकने का है रे! माल चैक करना है!
पुलिस चैक पोस्ट
चैकपोस्ट
(ठहरिये) चैक पोस्ट
कांच का सामान
मरी मछली लदेला है सब। ट्रक रोका तो और सड़ जाएंगी। ही ही ही!

राजनगर के समुद्र में कचरा इतना बढ़ गया है कि जिन्दा मछली भी सड़ी हुई निकलती है।
हवलदार खोलकर! बक्सा खोलो!
खोलता है साब! बचपन में मैं हर चीज़ को खोल देता था। इसलिए मां-बाप ने मेरा नाम ही खोलकर रख दिया था। ही ही ही!
पुलिस चैक पोस्ट
बजरंगा! ये बक्सा खुल गया तो हम बन्द हो जाएंगे!
बली! तो फिर दौड़ा दे टैम्पो हमारा नाम लेकर। ही ही ही!
मुझे तो इसमें से कूदने की आवाजें आ रही हैं।
मछलियां कूद रही होंगी साब!
जय बजरंग बली!
आह! मरा!
टैम्पो से गिरा बक्सा खुल गया, और –
अरेरे! ये तो भाग रहे हैं!
वो भाग नहीं रहे साब! टैम्पो को भगा रहे हैं। ही ही ही!

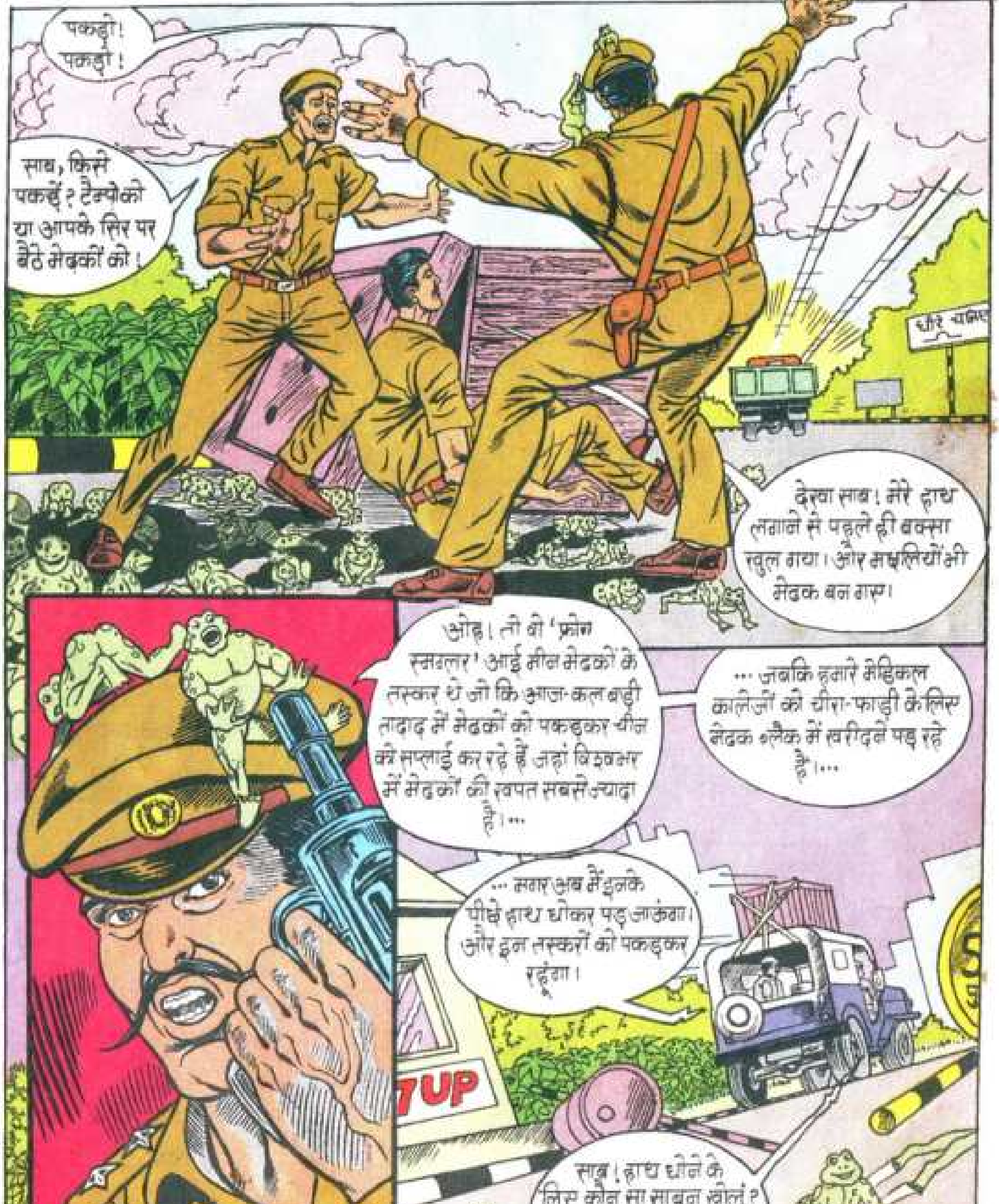
पकड़ो! पकड़ो!
साब, किसे पकड़ूं? टैम्पो को या आपके सिर पर बैठे मेढकों को!
देखा साब! मेरे हाथ लगाने से पहले ही बक्सा खुल गया। और मछलियाँ भी मेढक बन गए।
ओह! तो वो 'फ्रोग स्मगलर' आई मीन मेढकों के तस्कर थे जो कि आज-कल बड़ी तादाद में मेढकों को पकड़कर चीन को सप्लाई कर रहे हैं जहां विश्वभर में मेढकों की खपत सबसे ज्यादा है।...
...जबकि हमारे मेडिकल कालेजों को चीरा-फाड़ी के लिए मेढक ब्लैक में खरीदने पड़ रहे हैं।...
...मगर अब मैं इनके पीछे हाथ धोकर पड़ जाऊंगा। और इन तस्करों को पकड़कर रहूंगा।
साब! हाथ धोने के लिए कौन सा साबुन खोलूं? लक्स या निरमा?
7UP

राजनगर में कहीं एक कुख्यात तस्कर पवनपुत्र-
क्या? हमारे पकड़े हुए सारे मेंढक पकड़े गए?
उफ! अगर मेंढक उछलते हुए वापस हमारे अड्डे पर आ गए तो उनका पीछा करती हुई पुलिस भी यहां पहुंच जाएगी!
मैं पूछता हूं बम से क्यों नहीं उड़ा दिया?
सारे मेंढक चारों तरफ फैल गए थे जीजाजी!
हां... हां जीजाजी! और इतने बम हमारे पास नहीं थे। हम यहां इतने बम ही तो लेने आए थे। क्यों बजरंग?
चुप!
अरे, मेरी बीवी के भाइयो, यानी मेरे सालो! मैं एक बम से सारे पुलिस वालों को उड़ाने की बात कर रहा था! बहू हू हू!
ओह! ये तो हमने सोचा ही नहीं!
तुझे कितनी बार कहा है बजरंग कि ऐसे टाइम पर ज्यादा सोचा कर, भले ही पुलिस पकड़ ले! अब करवा दिया न जीजाजी का लाखों का नुकसान!
पुच्ची-पुच्ची जीजाजी! हमें माफ कर दो!
अबे बाल छोड़!
नकली हैं। विग उतर गई तो बीवी भी मारेगी। उसे अभी भी नहीं पता कि मैं गंजा हूं।

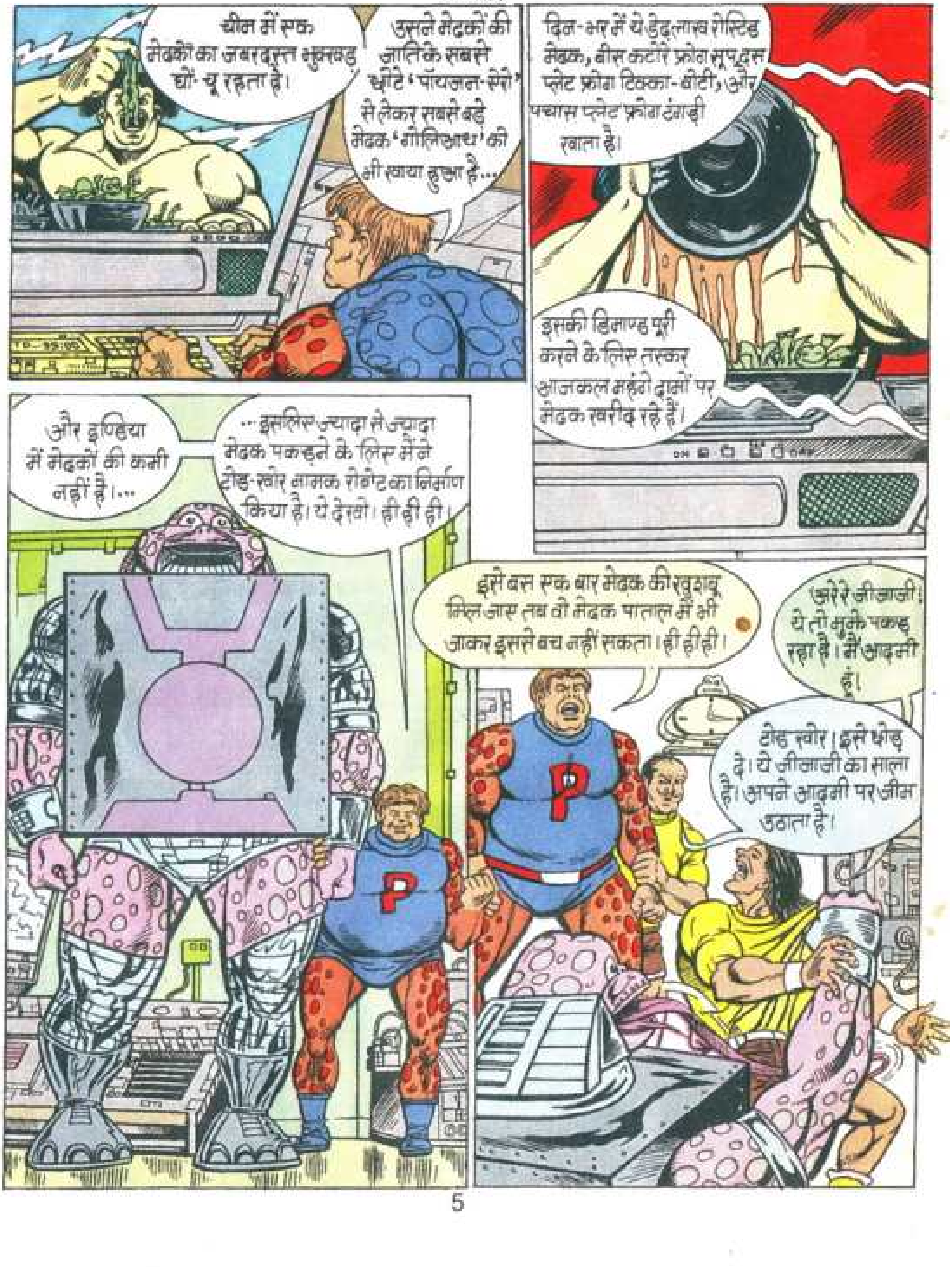
चीन में एक मेंढकों का जबरदस्त शुक्खड़ घों-चू रहता है।
उसने मेंढकों की जाति के सबसे छोटे 'पॉयजन-ऐरो' से लेकर सबसे बड़े मेंढक 'गोलिआथ' को भी खाया हुआ है...
दिन-भर में ये डेढ़ लाख रोस्टिड मेंढक, बीस कटोरे फ्रोग सूप, दस प्लेट फ्रोग टिक्का-बोटी, और पचास प्लेट फ्रोग टंगड़ी खाता है।
इसकी डिमाण्ड पूरी करने के लिए तस्कर आजकल महंगे दामों पर मेंढक खरीद रहे हैं।
और दुनिया में मेंढकों की कमी नहीं है।...
...इसलिए ज्यादा से ज्यादा मेंढक पकड़ने के लिए मैंने टोड-खोर नामक रोबोट का निर्माण किया है। ये देखो। ही ही ही।
इसे बस एक बार मेंढक की खुशबू मिल जाए तब वो मेंढक पाताल में भी जाकर इससे बच नहीं सकता। ही ही ही।
अरे रे जीजाजी! ये तो मुझे पकड़ रहा है। मैं आदमी हूं।
टोड-खोर। इसे छोड़ दे। ये जीजाजी का साला है। अपने आदमी पर जीभ उठाता है।

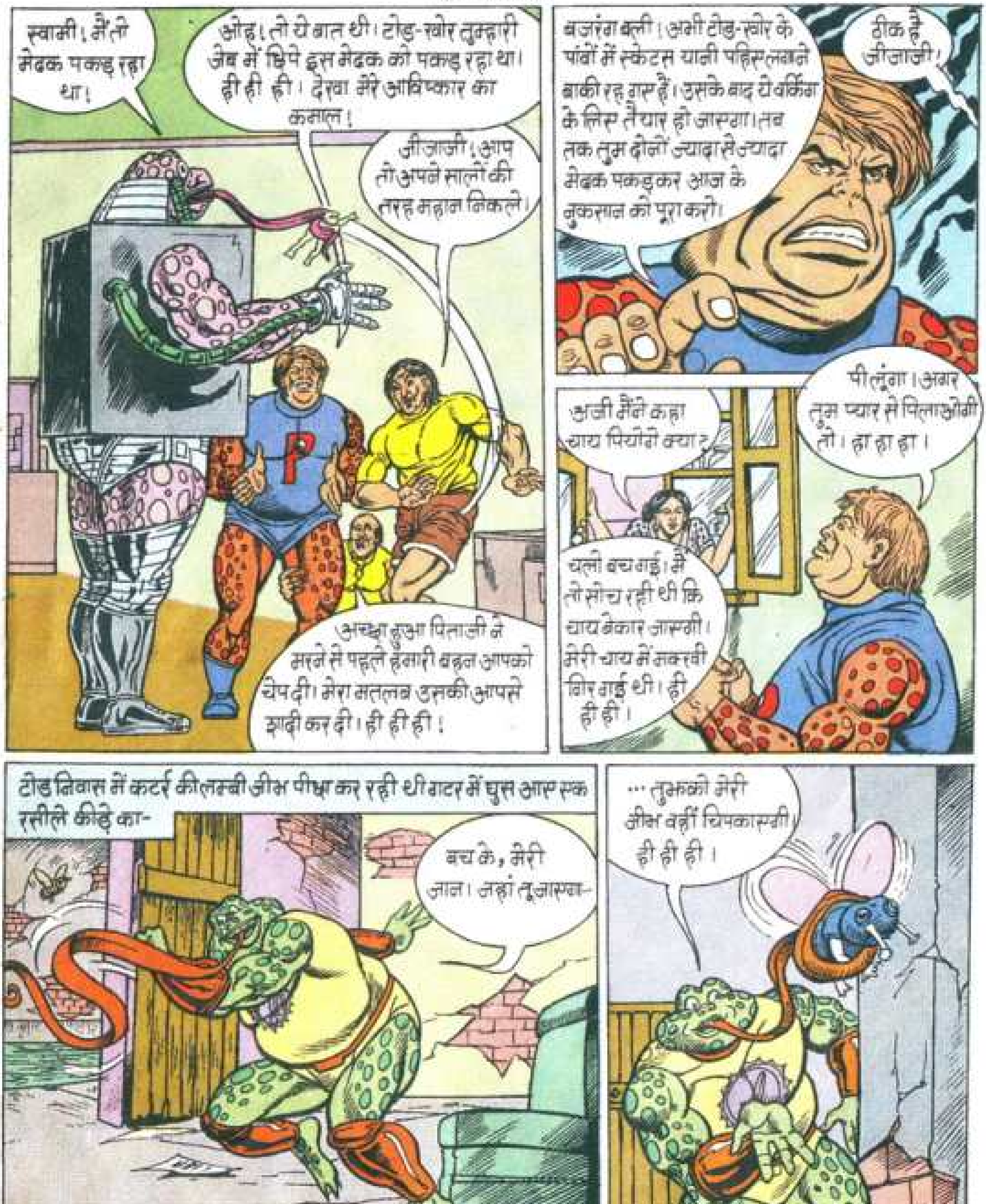
स्वामी! मैं तो मेंढक पकड़ रहा था!
ओह! तो ये बात थी। टोड-स्वोर तुम्हारी जेब में छिपे इस मेंढक को पकड़ रहा था। ही ही ही। देखा मेरे आविष्कार का कमाल!
जीजाजी! आप तो अपने सालों की तरह महान निकले।
अच्छा हुआ पिताजी ने मरने से पहले हमारी बहन आपको चेप दी। मेरा मतलब उसकी आपसे शादी कर दी। ही ही ही!
बजरंग बली! अभी टोड-स्वोर के पांवों में स्केटस यानी पहिए लगाने बाकी रह गए हैं। उसके बाद ये वर्किंग के लिए तैयार हो जाएगा। तब तक तुम दोनों ज्यादा से ज्यादा मेंढक पकड़कर आज के नुकसान को पूरा करो।
ठीक है जीजाजी!
अजी मैंने कहा चाय पियोगे क्या?
पी लूंगा। अगर तुम प्यार से पिलाओगी तो। हा हा हा।
चलो बच गई। मैं तो सोच रही थी कि चाय बेकार जाएगी। मेरी चाय में मक्खी गिर गई थी। ही ही ही।
टोड निवास में कटर की लम्बी जीभ पीछा कर रही थी गटर में घुस आए एक रसीले कीड़े का-
बच के, मेरी जान। जहां तू जाएगा-
... तुझको मेरी जीभ वहीं चिपकाएगी। ही ही ही।

क्रिच्च
लगता है कार्टर को कीड़े की हड्डी चुभ गई है।
बस मास्टर और नहीं चलेगा!
क्या? मास्टर और क्यों नहीं चलेगा? ये तू क्या कह रहा है कार्टर?
मास्टर! तुम्हें टांगों में कोई कमजोरी-वमजोरी महसूस तो नहीं हो रही है न?
तेरी बात का क्या मतलब है कार्टर?
मेरा मतलब वो नहीं है, जो तुम सारे समझ रहे हो। ऊपर देखो। दायें देखो। बायें देखो। सब समझ में आ जायेगा।
अगर तुममें दिमाग होता तो। ही ही ही।
ऊपर क्या है?
ऊपर तो छत है।
हां। छत है। और दायें-बायें दीवारें हैं।

ओफ्फ! पता नहीं टोडदेव ने मुझे तुम मूर्खों के साथ यहां क्यों भेज दिया? इतनी सी बात समझ में नहीं आ रही तुम्हारे।
होश की बात कर कटर! तू भले ही कंप्यूटर और मास्टर को मूर्ख कह ले। पर मुझे कहा तो मैं तेरा मुंह तोड़ दूंगा। बड़ा आया अक्ल का गोदाम। हुंह!
शूटर को बिल्कुल बुद्धू ही समझते हैं।
हम नहीं समझते हम तेरी बात। तुझमें दम है तो तू ही समझा दे।
छत और दीवारों का पेंट उतर रहा है। और उसी की रेत कीड़े के साथ मेरे मुंह में चली गई थी।
ही ही ही! कटर पागल हो गया है। कह रहा है कि छत और दीवारों की पेंट उतर रही है। ही ही ही!
ही ही ही!
तू कहां जा रहा है कटर?
पेंट लाने! मैं अपने वाले हिस्से में पेंट करूंगा। ताकि मेरी तरफ की दीवारों और छत से पेंट न झड़े।
कंप्यूटर! तेरे पास पेंचकस तो होगा। जरा मुझे दियो। मैं इसके दिमाग का पेंच कस दूं। ही ही ही!

प्यारे टोड्स, कटर ठीक कह रहा है। टोड-निवास की सारी दीवारों का बुरा हाल है।
!!
अगर पेंट न किया गया तो पूरा प्लास्टर उखड़ जाएगा।
कंप्यूटर! तू कटर के साथ जा वरना ये हमेशा की तरह बाहर जाकर कोई गड़बड़ कर देगा। और खुद भी मुसीबत में फंसेगा और हमें भी फंसाएगा।
ठीक है मास्टर! मैं भी आता हूं।
कंप्यूटर भी कटर के पीछे-पीछे टोड-निवास से बाहर निकल गया-
और तभी-
ओह! निशाना चूक गया। अखबार तीसरे फ्लोर पर जाने की बजाए गटर में गिर गया।
ये कटर का बच्चा जब भी गुस्से में जाता है, गटर को ढकना भूल जाता है।
ये तो समाचारपत्र है। चलो जब तक कटर और कंप्यूटर लौटकर आएं इसे ही पढ़ते हैं।

कर्टर ! रुक ! रुक मैं भी आ रहा हूं तेरे साथ !
ठीक है! पर अपनी कंप्यूटरी झाड़ती है तो रहने दे। मैं अकेला ही पेंट ले आऊंगा।
नहीं झाड़ूंगा। पर तू पेंट लाएगा कहां से ? तुझे पता है ?
ही ही ही !
ये तो नहीं पता!
मुझे कंप्यूटरी झाड़ने से मना कर रहा था। ही ही ही!
पेंट मिलेगा दुकान से !
दो कान तो मेरे पास भी हैं। चारों को मिलाकर आठ कान हो गए। ऐसे तो बहुत सारा पेंट मिल जाएगा। तू खामख्वाह मुझे बाहर ले आया। पहले ही बोल देता गटर के अन्दर!
दुकान
अबे कान नहीं दुकान। जहां से पेंट खरीदना पड़ता है।
पेंट खरीदना पड़ता है ? मगर खरीदने में तो फिर वही मुद्राओं का चक्कर पड़ेगा जो हमारे पास नहीं हैं!

तो क्या हुआ? मुद्रा पाने के लिए हम कोई भी काम कर लेंगे। आखिर हम हट्टे-कट्टे हैं।
काम? मगर हम काम क्या करेंगे?
भगवान के नाम पर मेरा एक काम कर दो!
तूने सुना कंप्यूटर? हम उसका काम कर देते हैं। बदले में वह हमें मुद्रा देगा।
हां, चल!
हम तुम्हारा काम कर देंगे। बोलो क्या करना है?
अंधे की लाठी टूट गई है। सूरदास को सड़क के पार पहुंचा दो!
बस! इतना सा काम! चल कंप्यूटर, तू पैरों की तरफ से पकड़!
और-
अरे रे! मेरी लाठी टूटी है मेरे पांव नहीं। मैं चल सकता हूं। ये तुम मुझे बकरे की तरह उठाकर क्यों ले जा रहे हो? अरे, मैं तो उड़ा जा रहा हूं। तुम दोनों हवाई जहाज के कप्तान हो क्या?

भिखारी को सड़क पार कराने के बाद-
हमने तुम्हारा काम कर दिया। अब मुद्रा दो। यानी पैसे।
पैसे! कैसे पैसे?
ऐसे! हम टोइस मुफ्त में काम नहीं करते। हमने तुझे सड़क पार कराने का काम किया है।
क्या कहा? तुमने मेरा काम किया है? मगर मैं तो अपना काम कर रहा था। ये तो मेरा रोज का काम है।
चल पैसे निकाल जल्दी, मुझे पेंट लेना है।
एक तो जेब में कुछ नहीं रखते। दिहाड़ी खराब कर दी। ऊपर से मुझसे ही पैसे मांग रहे हो!
कंप्यूटर! ये भी दूसरे आदमियों की तरह बेईमानी कर रहा है। और हमारी मेहनत की कमाई मारना चाहता है। मगर कार्टर ये नहीं होने देगा।
थू sss थू sss
!!
मेरे इस लाफे से ये जब तक घूमना बन्द करेगा, तब तक हमारी कमाई हमारे जेब में होगी!
तड़ाक
बचाओ! मैं लुट गया!

भिखारी यूनियन जिन्दाबाद!
इन दोनों को पकड़ लो। इन्होंने अंधे भिखारी को लूटा है।
आज मुझे भीख नहीं मिली।
लगता है अब बोलना ही पड़ेगा...
...टोडुस...
रहने दे कंप्यूटर! इन्हें तो मैं तेरे टोडुस एक्शन के बिना ही लूट लूंगा।
तुम आदमियों ने हम टोडुस को समझा क्या है? एक-एक को मजा चखा दूंगा। हीहा ऽऽऽ ऊऽऽऽ ऊऽऽऽ
अबे लंगड़े, भाग!
अरे! इसके पास तो काटने वाली तलवार है!
मेरी तो टांग भी एक है। ये भी कट गई तो भीख मांगने का क्या फायदा होगा।
अबे, पर मैं लंगड़ा कैसे भागूं?
अबे! जब मैं गूंगा बोल सकता हूं तो तू लंगड़ा क्यों नहीं भाग सकता!

देखा ! शराफत का तो जमाना ही नहीं है। मेहनत की कमाई की कितनी खुशी होती है न कंप्यूटर ! चल, चलें पेंट की दुकान पर। अब तो हमारे पास मुद्रा भी है।
चल !
वो तो जेब में घुस गया !
पर वहां से बचकर जाएगा कहां ?
कटर्र से होशियारी नहीं चलेगी बच्चू !
!!
कटर्र काट के रख देता है। हीयाऽऽऽ
हाऽऽयाऽऽ
आह ! मर गया, बली, बचा !
तूने मेरे भाई को मारा ! मैं तेरा कोट और पेंट दोनों चीर डालूंगा।
खबरदार बली ! कल तो तू इससे एक टमाटर भी चीर नहीं पा रहा था... रहने दे, वरना पिटेगा !
पेंट चीरेगा? आ चीर। कोट तो मैं तुझे नहीं चीरने दूंगा !

चाकू बन्द कर ले बली! देखो कोट वाले भैया! हमारी तुमसे कोई दुश्मनी तो है नहीं...
...हमारी जो चीज तुम्हारे पास है, हम वो लेकर चुपचाप चले जाएंगे। क्योंकि हम अपने से ताकतवर से नहीं लड़ते।
तुम्हारी कौन सी चीज हमारे पास है?
बली! इसकी जेब में से निकाल ले।
ओ.के. बजरंग!
मुझे पहले ही पता था कि तुम मुद्रा उड़ाने के चक्कर में हो।
खबरदार! कोई हरकत की तो चाकू गर्दन में घुसा दूंगा।
घुर्रर्रर्र! कंप्यूटर, जरा बोलियो तो!
हीहीही।
लगता है अब तो बोलना ही पड़ेगा...
...टोड एक्शन!

कहानी 18वें पृष्ठ से जारी

दूसरे ही पल–
याऽऽऽऽईऽऽ
ताबड़तोड़ मारियो, बजरंगा।
आह! मर गया।
धाड़
मारा तो तुने है, मरा भी तू। ही ही ही।
अबे घनचक्कर! तू मुझे इसमें फांसेगा? कटर्र को?
हाय! ये तो फंसा ही नहीं।
ऐसे ही खड़ा रहियो। अपने-आप मत हिलियो। ही ही ही।
ईया ऽऽऽ ऊऽऽऽ मर गया।
अबे! बीमा तो करवाने दे। जीवन तो फूटी कौड़ी नहीं देगा मेरे घरवालों को। बहूहूहू।

तूने मुझे यहां मारा था न ?...
...जरा देख तो, कोई दांत हिला तो नहीं।
हां !...
...देखता हूं। मेरे ख्याल में नहीं हिला।
मगर अब हिलेंगे। तेरे। वो भी सारे। ही ही ही !
बजरंगा ! हमारा नाम लेकर भाग !
जय बजरंगबली ! रुकना नहीं। रेल की तरह दौड़। छुक छुक छुक।
तू पीछे से मेरी कमीज पकड़ ले ताकि मैं रेल की तरह भागूं तो तू डिब्बा कहीं पीछे न छूट जाए। कूSSS
जल्दी ही-
कूऊSSSSSSSS
छुक छुक छुक कूSSS
अबे मेरी बीवी के भाइयो यानी मेरे सालो ! ये तुम्हारी रेल किसने बना दी ?

बजरंग ! तू डिब्बा है। सीटी इंजन बजाता है, और इंजन मैं हूं। कूं ऽऽऽ छुक छुक !
डिब्बा धड़- धड़ करता है। मैं धड़- धड़ करता हूं। धड़- धड़। धड़- धड़। गड़म- गड़म। गड़म- गड़म।
अबे अपनी बहन के भाइयो! रुक जाओ। वरना मैं अपना सिर पटरी पर रख दूंगा तो तुम्हारी बहन विधवा हो जाएगी।
और आखिर पवनपुत्र को वह रेल रोकने के लिए दिमाग लगाना ही पड़ा-
ओह! रेड सिग्नल! रेल रुक रही है
ओह! कौन सा स्टेशन है?
अबे अपने जीजे के सालो ! तुम तो मेंढक पकड़ने गए थे। मेंढक डिब्बे में छोड़ दिए थे कि नहीं?
जीजाजी ! आप यहां स्टेशन पर क्या कर रहे हैं?
जरूर जीजी की मायके छोड़ने- वोड़ने आए होंगे। है न जीजा- जी !
अबे मेरे ससुर के कपूतो ! मेरी बीवी का तो पूरा मायका मेरे ही घर में रहता है। मेरा ही खाता है। मेरा ही पहनता है। और सुबह तुम दोनों मेरी चड्डियां भी पहन गए। कमबख्तो, मेरे पास दो ही थीं। बहूहूहू।
तो फिर जीजाजी, आपने क्या पहना?
मेरे बचपन का लंगोट। बहूहू।

और तब बजरंग, बली ने कह सुनाई पूरी दास्तान। फिर-
बस जीजाजी! वो तो हम आपसे पूछने चले आए कि इतने बड़े-बड़ों को पकड़ें या नहीं। वरना हम तो वहीं मार-मारकर उनका भूत बना देते। क्यों बली? ही ही ही!
और नहीं तो क्या? इसीलिए तो हम रेल बने ताकि जल्दी यहां पहुंच-कर आपसे पूछ लें। ही ही ही
अजी तैंने काहा सुनती हो!...
...तुम्हारे खानदान में ऐसे दो-चार सपूत और पैदा क्यों नहीं हुए? गुर्रर्र। ही ही ही!
इस देश की किस्मत ही खराब थी जी। वरना मेरे 'मॉम' और 'पॉप' को पागलखाने वाले पकड़कर न ले जाते। जैसे चिड़ियाघर वाले तुम्हारे मम्मी-पापा को पकड़कर ले गए थे।
हां जीजी! तब से उनका चिड़ियाघर भी चल निकला था। ही ही ही!
गुर्रर्र!...
...अब ध्यान से सुनो मेरी सास के बेटो! मुझे वो बड़े वाले टोड्स चाहिए। तुम टोडखोर को लेकर उन्हें ढूंढने जाओ। वो जहां भी होंगे, टोडखोर उन्हें ढूंढ निकालेगा। ही ही ही!
ठीक है मामाजी! हम तो आपके साले हैं! आपका हुक्म कैसे टाल सकते हैं!
जीजी! चाय तो पिला दो। ये जीजाजी तो हमें कोल्हू के बैल की तरह हरवक्त हल में जोते रखते हैं। हमारे लिए पूरा कप और जीजा के लिए आधा कप, वो भी बिना दूध, पत्ती, चीनी की लाना। ही ही ही!

कुछ देर बाद टोडखोर निकल पड़ा छोटे-बड़े सभी तरह के मेढकों की तलाश में -
बली! इस बार वो (स्टूप) वाले हमारे हाथों से नहीं बचेंगे। ही ही ही।
चाय पी ले जल्दी! कहीं कोई दादुर चाय में न कूद जाए।
इधर कटर और कंप्यूटर-
अरे वाह! वो अपने घर पर पेंट कर रहा है। इसे गटर में ले चलते हैं। ये हमारे गटर में भी पेंट कर देगा।
ओ रे आदमी! हमारे टोड निवास में भी पेंट कर दोगे?
कर दूंगा! पता बोलो!
उत्तरी दिशा में सूखे कुएं का तलघर जहां से सारे गटर गुजरते हैं। अरेरे मेरा टोप?
और कटर की सूरत देखते ही-
ईईईsss गटर के भूत!

अबे इतनी भी क्या जल्दी थी नीचे उतरने की। सीढ़ी-सीढ़ी नीचे क्यों नहीं उतरा?
ईऽऽईऽऽ
संभलते ही पेंटर अंदर की तरफ भाग लिया—
अरे! ये तो अपनी सीढ़ी, पेंट का डिब्बा और कूची भी यहीं छोड़ गया!
चल! इसकी सीढ़ी और पेंट का डिब्बा उसे अन्दर दे आते हैं। और उसे गटर भी साथ ही ले चलेंगे!
अन्दर—
मेरा हिसाब कर दो। मेरी मरी हुई नानी फिर से मर गई है। मुझे फौरन उसकी अर्थी को कंधा देना है।
क्या? ओह! ये सौ रुपए मैं तुझे बुलसिर दे रहा हूं, क्योंकि मुझे नानी के मरने का दुख पता है। क्योंकि मेरी नानी तो हमेशा ही मरी रहती है। उसकी तो अर्थी भी नहीं उठती… बहूहूहू!
पेंटर पलटकर भागा तो अन्दर आती सीढ़ी से टकरा गया। और—
आह मरा! ये तो अन्दर भी आ गए!

कार्टर की टोपी एक बार फिर उछल गई, और इस बार उछल पड़ा पवनपुत्र भी–
हाय... ये... ये तो वही है। ये... ये तो खुद चलकर मेरे पास आ गए। इतने बड़े-बड़े।
आह!
अरे! हम तो तेरी सीढ़ी, कूची और पेंट का डिब्बा वापस करने आए थे!
अजी! मैंने कहा सुनती हो! दो चाय भिजवाना। स्पेशल क्लोरोफार्म मार कर। ही ही ही!
तुम्हें कहीं चोट तो नहीं लगी मेरे चोको? क्योंकि तुम्हारे शरीर पर लगी चोट मेरी जेब पर चोट करेगी। ही ही ही!
टंगड़ी तो मजबूत है। मीट भी बहुत है शरीर पर। सिरी में भी काफी जान है। खरोड़े भी अच्छे बनेंगे। ही ही ही।
अजी! मैंने कहा चाय बनी कि नहीं। घर में मान न मान तू, मेरे मेहमान आए हैं।
लो! मेरी बीवी के हाथों की चाय पियो, जिसे मैं कभी पचा नहीं पाया। हम घर आने वालों को बिना चाय पिए नहीं जाने देते। बिस्कुट कल मैंने अपने ससुर को खिला दिए थे क्योंकि उन पर फफूंदी लग गई थी।
हाथों की चाय? फिर तो ये नॉन वैज चाय हुई। मगर इसमें हाथ तो हैं ही नहीं?
हाथ घुल गए होंगे कटर! शक्कर भी तो घुल जाती है।

चाय इतने प्यार से... पिला रहे हो तो हम... पी... लें...
...लें... हैं।
अजी सुनती हो! मैंने कहा आज मैं बहुत खुश हूं। आज मैं तुम्हारी पप्पी लूंगा। मगर अपने मुंह पर कपड़ा लपेटकर आना। वरना मैं भी कहीं बेहोश न हो जाऊं। बहूहू! ही ही ही।
उधर बजरंग, बली टोडखोर के साथ सड़क-सड़क की खाक छानते फिर रहे थे-
मेरा पेट मेढकों से भर गया है। और जगह नहीं है।
पर अभी तक वो वाले तो मिले नहीं।
मास्टर! मुझे तो चिन्ता हो रही है। कटर और कंप्यूटर अभी तक नहीं आए।
अखबार में खबर छपी हुई थी कि आजकल टोड्स की तस्करी जोरों पर है। और तस्कर धड़ल्ले से टोड्स पकड़ रहे हैं। मेरी चिन्ता इसी खबर से है।
ये क्या कर रहा है, बजरंग?
इतने सारे मेढक खाकर इसे कहीं 'कै' तो नहीं आ गई। और ये जगह ढूंढ रहा हो!

अरे! इसने तो सारी जीभें एक साथ गटर में सरका दी हैं।
और दूसरे ही पल बजरंग, बली की आंखें मारे प्रसन्नता से चौड़ी होती चली गईं-
मिल गए! ही ही ही!
मास्टर! हमें इसने अपनी जीभ में बुरी तरह चिपका लिया है।
ये जरूर उन्हीं तस्करों का साथी है शूटर!
इन्हें कहां लाई?
टोडखोर ने अपना पेट छोटे मेढकों से खाली कर लिया-
निकट ही-
इतने सारे मेढक! जरूर किसी ने इन्हें पकड़कर छोड़ा होगा। पीछा करो!

अरे, ये दोनों तो वही टैम्पो वाले अनोखे टोड-तस्कर हैं।...
...पर आज मैं इनका पीछा करूंगा ताकि उनके अड्डे सहित इन्हें गिरफ्तार कर सकूं। ही ही ही!
और फिर-
जीजाजी!
हम उन्हें ले आए!
किन्हें?
उन्हें तो मैंने पकड़ रखा है। उस बक्से में। और बक्सा मैं स्पीड पोस्ट से चीन भिजवा रहा हूं!
मगर किन्हें?
कांच का सामान सावधानी से रखें!
इतने बड़े-बड़े वाले टोड्स! और क्या?
बजरंग! लगता है जीजाजी पर खानदानी असर शुरू हो गया है। ही ही ही!
पता नहीं किसको बन्द कर दिया है जीजाजी ने इस बक्से में। क्योंकि इतने बड़े टोड्स तो हम टोडखोर के पेट में पकड़कर लाए थे!
हो ही नहीं सकता। दिखाओ तो जानूं!
टोडखोर! जरा दिखा तो!
ओ॰ के॰ स्वामी!

टोडखोर के पेट का ढक्कन खुलते ही मास्टर और शूटर उछलकर बाहर निकल पड़े–
शूटर! ये वही तस्कर हैं। और इनकी बातों से लग रहा है कि कटर और कंप्यूटर भी यहीं हैं।
हैं! मगर मैंने जिन्हें बक्से में बन्द किया है, वो भी तो ये ही हैं।
बजरंग! कहीं जीजाजी ने जीजी को तो मारकर इसमें बन्द नहीं कर दिया। कहीं जीजाजी दूसरी शादी के चक्कर में हों!
हां! लड़की चेपने वालों की कमी नहीं। अब तो बक्सा खोलकर देखना ही पड़ेगा।
कांच का सामान
नहीं! बक्सा मत खोलो!
और बक्सा खुलते ही–
धा ड़
आई ऽऽऽ ऊ ऽऽऽ मर गया।
कंप्यूटर! कटर! ये टोड्स तस्कर हैं।
अरे! तुम दोनों भी यहां!
मास्टर! शूटर! तुम भी यहां!
कांच का सामान
तो फिर मैं बोलता हूं... टोड्स स्क्वाड!
दूसरे ही पल टोड्स के हथियार बाहर आ गए–

और-
धांय
तू ही हमें यहां लाया था न!
हमें टोडखोर के साथ तूने पकड़ा था न! अब देख हम तुझे कैसे पकड़ते हैं।
तूने हमें बेहोश कर देने वाली चाय पिलाई थी! ले अब कुरकुरी तलवार का भुरभुरा वार! ही ही ही!
टोडखोर! लपेट इन्हें!
ओ॰के॰ स्वामी!
मेरे सालों का मैं जीजा। मैं पहले ही कह रहा था कि बक्से मत खोलो। मरवा दिया न अब!
जीजी!
हवा में गूंज उठी रॉकेट सरसराने की आवाज, जिसे सुनकर पवनपुत्र ने फौरन अपना सिर झुका लिया, और-
ओह! ये तो जानी-पहचानी आवाज है। बाप रे! बाल-बाल बचा!
आह, स्वामी! मुझे मरवा दिया...
...यह वार मेरी बेटी पर पड़ा है कनपटी पर जाकर और मैं बेकार हो गया हूं। ह ह ह ह!

तभी-
पकड़ लो इन्हें। आखिर मैं इन दोनों कानखजूरों का पीछा करता हुआ यहां आ पहुंचा।
म हू हू! जीजाजी अब जेल का फीका खाना, खाना पड़ेगा।
हां! मगर वो तुम्हारी जीजी के जले खाने से तो अच्छा होगा। बहूहू!
मास्टर! पुलिसजी आ गए। खिसक।
मैं ये पेंट का डिब्बा तो ले लूं।
सलाम साब!
ओह! सलाम! सलाम। जब भी कोई मुझे सलाम करता है, खुशी के मारे मेरी आंखें बन्द हो जाती हैं। जाओ ऐश करो! कोई काम पड़े तो बताना। ही ही ही!
और फिर-
मास्टर! देख! जितना पेंट मिला था उससे मैंने टोड़खिवाल के कोने-कोने चमका दिए हैं। ही ही ही!
कटर! अब तू कोने में जाकर ही कीड़े खाया कर। तेरे मुंह में रेत नहीं आयेगी। ही ही ही!
वाह!
समाप्त